पाठ-20 भाव पल्लवन

मुख्य विषय

यह भाव-पल्लवन का अर्थ है - किसी भाव का विस्तार करना। इसमें किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। भाषा व्यवहार में निपुण होने के लिए हमें भाव पल्लवन का अभ्यास करना आवश्यक है, जिससे हम ऐसी अभिव्यक्तियों में निहित भाव का इस प्रकार विस्तार करें कि सुनने वाले या पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी बात समझा सकें। इस पाठ में भाव पल्लवन के अर्थ के साथ अन्य विधाओं से इसकी तुलना की गई है और इसके विभिन्न चरणों के साथ-साथ ध्यान रखने योग्य मुख्य बातों का भी उल्लेख है।

मुख्य विशेताएँ

1. भाव-पल्लवन में किसी गंभीर सूक्ति या कहावत की ऐसी व्याख्या की जाती है, जिससे लेखक का आशय या मंतव्य या संदेश पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है।
2. भाव-पल्लवन करते समय उक्तियों, सूक्तियों आदि में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए उसका विस्तार किया जाता है जबकि व्याख्या में विस्तार से विवेचन के साथ-साथ टीका-टिप्पणी या आलोचना भी की जाती है। व्याख्या में संदर्भों का उल्लेख भी किया जाता है और उदाहरण भी दिए जाते हैं, जबकि भाव-पल्लवन में यह छूट नहीं है।
3. भावार्थ में किसी भी उक्ति अथवा सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मूल भाव को व्यक्त करना होता है, उसे विस्तार देना नहीं होता।
4. भाव-पल्लवन संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है। संक्षेपण का अर्थ होता है - संक्षिप्त या छोटा रूप। इसमें विस्तृत विषय को संक्षेप में दिया जाता है। भाव-पल्लवन का अर्थ होता है - विस्तृत या बड़ा रूप। इसमें किसी उक्ति या विचार-सूत्रा का विस्तार से विवेचन किया जाता है।
5. निबंध के विषयों की सीमा नहीं होती जबकि भाव-पल्लवन के अंतर्गत सभी प्रकार के विषय नहीं आते। निबंध में उद्धरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का बहुल प्रयोग हो सकता है।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया के चरण

- किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि को समझना;
- उक्ति, सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले विचार बिंदुओं को लिखना;
- इन बिंदुओं को क्रमवार रखना;
- इन बिंदुओं का विस्तार करना; और
- मूल भाव का प्रभावपूर्ण शैली में वर्णन करना।

सबसे पहले हम किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि पर विचार करते हैं और यह समझने का प्रयास करते हैं कि उसमें कौन-सा भाव निहित है और उसका क्या अर्थ है? इसके बाद उस उक्ति अथवा वाक्य के अर्थ या भाव को स्पष्ट करने के लिए तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए अन्य मिलते-जुलते विचार बिंदुओं को अपने मन में जुटाते हैं तथा उन्हें किसी कागज़ पर लिखते है। इसके बाद मूल भाव पर ध्यान देते हुए उन्हें क्रमवार रखते हैं। तत्पश्चात् इन बिंदुओं को स्पष्ट करते हुए इसका विस्तार करते हैं ताकि उक्ति, वाक्य का मूल भाव पूरी तरह से स्पष्ट हो सके। इसमें यह भी ध्यान देते हैं कि मूल भाव का वर्णन प्रभावपूर्ण शैली में हो।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया में ध्यान रखने योग्य बातें

1. सर्वप्रथम किसी दी गई मूल उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि पर थोड़ी देर तक सोचें ताकि मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
2. मूल भाव को स्पष्ट करने और प्रभावपूर्ण बनाने वाले अन्य भावों या विचार बिंदुओं को इकट्ठा करें।
3. इनको संकेत के रूप में एक पृष्ठ पर लिख लें ताकि कोई विचार छूट न जाए।
4. इसके बाद इन विचार-बिंदुओं को एक-एक करके क्रमानुसार लिखें। यदि संभव हो तो प्रत्येक भाव या विचार अलग-अलग अनुच्छेद में भी दे सकते हैं।
5. मूल भाव का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में कोई उदाहरण या तथ्य देने की आवश्यकता पड़ती है, तो वह भी दिया जा सकता है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. 'भाव-पल्लवन, संक्षेपण का विलोम है।' इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. भाव पल्लवन करते समय पांच प्रमुख सावधानियों का उल्लेख कीजिए।
3. नीचे दी गई उक्तियों का भाव-पल्लवन लिखिएः
   (क) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
   (ख) पर उपदेश कुसल बहुतेरे।
   (ग) होनहार विरवान के होत चीकने पात